

>

Title: Need to prevent the exploitation of labourers in un-organised sectors of the country.

**कुमारी सरोज पाण्डेय (टुर्नर) :** अध्यक्ष मठोदया, मैं आपके माध्यम से सदन का ध्यान छारे देश के उन मूल शिल्पकारों की ओर दिलाना चाहती हूं, जो आज भी शोषित और पीड़ित हैं। ये वे शिल्पकार हैं, जो हमारे विकास में अपनी सहभागिता बहुत तेजी के साथ निभाते हैं। मैं अपने देश के रिवशावाले, कुली, घरों में काम करने वाली बालियों आदि के बारे में बात कर रही हूं। मैं इस विषय को यहां इसलिए उठाना चाहती हूं क्योंकि आज तक उनके लिए कोई भी एकीकृत योजना नहीं बनी है।

मठोदया, मैं आपके माध्यम से सदन का ध्यान उनकी मूलभूत सुविधाओं की ओर भी आकर्षित करना चाहती हूं, क्योंकि ये जो काम करते हैं और उन्हें उनके काम के एकज में जो रोजी गिलनी चाहिए, वह भी पर्याप्त नहीं हो पाती है, न तो उनकी शिक्षा-दीक्षा की कोई व्यवस्था हो पाती है और न उनके बत्ते किसी सुनहरी योजना की ओर देखा पाते हैं। छोता केवल यह है कि वे अपने जीवन के किसी तरफ से समाप्त होने का इंतजार करते हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि हमारे ये मूल शिल्पकार, जिन्हें हम अपने देश में असंगठित मजदूरों के रूप में पहचानते हैं, इन असंगठित भेत्र के मजदूरों के लिए सरकार तत्काल एक एकीकृत योजना बनाये और उनकी शिक्षा-दीक्षा सहित उनके सुनहरे भविष्य की योजना के लिए कुछ कार्य करें। यह वर्तमान समय की आवश्यकता है और यदि हम अपने देश में विकास की बात करते हैं तो हमें उन्हें साथ लेकर उठाना ही पड़ेगा।

आपने मुझे इस महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देती हूं।

**अध्यक्ष मठोदया :**

श्री चंद्रशाला साहू को कुमारी सरोज पाण्डेय द्वारा उठाये गये विषय से सम्बद्ध किया जाता है।